Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
B. A. Part -1 (Hons)
Paper -I
Indian Philosophy

"Jain: Bondage and liberation"1

(जैन: बन्धन तथा मुक्ति (मोक्ष))

जैन दर्शन वस्तुवादी बहुसत्तावादी एवं अनीश्वरवादी दर्शन है। जैन दर्शन का प्रधान उद्देश्य है बन्धन से मुक्ति प्राप्त करना।

भारतीय दर्शन में बन्धन का अर्थ निरन्तर जन्मग्रहण करना तथा संसार के दुःखों को झेलना है। जैनों के अनुसार जीव को ही बंधन के दुःख भोगने पड़ते हैं, तथा वह जन्म जन्मान्तर तक भटकता है।

जैन दर्शन के अनुसार कर्म ही बन्धन का कारण है। जीव अपने कर्मों या संस्कारों के वश ही शरीर धारण करता है। पूर्व-जन्म के विचार, वचन तथा कर्म के कारण जीव में वासनाओं की उत्पत्ति होती है। वासनाएँ तृप्त होना चाहती हैं। फल यह होता है कि वे पुद्गल को अपनी ओर आकृष्ट करती हैं जिससे विशेष प्रकार का शरीर बनता है। कर्मों से ही शरीर का रंग, रूप, आकार, आयु, ज्ञानेन्द्रिय तथा कर्मेन्द्रिय की संख्या एवं इनके विशेष धर्म निर्धारित होते हैं। समष्टि-दृष्टि से कर्म समस्त वासनाओं का समूह है जिसका फल समस्त धर्म-विशिष्ट शरीर है। किंतु व्यष्टि-दृष्टि से शरीर का विशेष-विशेष धर्म विशेष-विशेष कर्म का फल है। अतः जैनों के अनुसार कर्मों की संख्या अनेक है। क्रोध, मान, माया, लोभ

LIC

ही हमारी कुप्रवृत्तियाँ हैं जो हमें बंधन में डालती हैं। इन्हें कषाय कहते हैं क्योंकि ये पुद्गल कणों को अपनी ओर आकृष्ट कर लेते हैं। जीव की ओर कितने तथा किस प्रकार के पुद्गलकण आकृष्ट होंगे यह जीव के कर्म या वासना पर निर्भर करता है जीव की ओर जो कर्म-पुद्गल का प्रवाह होता है उसे आस्रव कहते हैं। जैन दार्शनिकों के अनुसार जीव का पतन या बंधन मानसिक प्रवृत्तियों के कारण ही होता है। वे बंधन के दो भेद मानते हैं।

(I) भाव - बंध तथा (II) द्रव्य - बंध

मन में दूषित भावों का आना तत्व ही भाव - बंध कहलाता है। जीव का पुद्गल से आक्रांत हो जाना द्रव्य - बंध कहलाता है। भावबन्ध द्रव्य - बन्ध का कारण है। भावबन्ध के बाद 'द्रव्य - बन्ध' का आविर्भाव होता है। बन्धन की अवस्था में पुद्गल तथा जीव एक दूसरे में प्रविष्ट हो जाते हैं। अतः कषायों के कारण कर्मानुसार जीव का पुद्गल से आक्रान्त हो जाना ही बन्धन कहलाता है।

जैन दर्शन भी। अन्य भारतीय दर्शनों की तरह मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है। मोक्ष बन्धन का प्रतिकूल है मोक्षावस्था में जीव पुद्गल

कणों से अलग हो जाता है। यही बंधन का कारण पुद्गलकणों का जीव की ओर प्रवाहित होना है। इसलिए मोक्ष प्राप्ति के लिए नये पुद्गलकणों का आत्मा की ओर प्रवाहित होने से रोककर तथा संचित पुद्गल के कणों को नष्टकर जीव कर्म पुद्गल से छुटकारा पा जाता है। कर्म पुद्गल से मुक्त हो जाने पर जीव अन्ततः मुक्त हो जाता है। नये पुद्गल कणों को रोकना 'संवर' कहलाता है। तथा पुराने पुद्गल कणों का क्षय 'निर्जरा' कहलाता है।

जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के लिए तीन मार्ग बतलाये गये हैं—
(i) सम्यक दर्शन (Right faith)
(ii) सम्यक ज्ञान (Right Knowledge)
(iii) सम्यक चरित्र (Right Conduct)

इन्हीं तीनों मार्गों पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है।

(i) Right faith — सत्य के प्रति श्रद्धा का भाव रखना सम्यक दर्शन कहा जाता है। कुछ व्यक्तियों में यह जन्मजात रहता है तथा कुछ लोग इसे विद्या एवं अभ्यास के द्वारा सिखते हैं। सम्यक-दर्शन का अर्थ बौद्धिक विश्वास (Rational faith) है।

(ii) Right Knowledge —

सम्यक ज्ञान में जीव और अजीव के मूल तत्वों का विशेष ज्ञान प्राप्त होता है। इसके लिए कर्मों का नाश आवश्यक है।

(iii) Right Conduct :—

14

हितकर कार्यो का आचरण और अहितकर कार्यो का वर्जन ही सम्यक चरित्र कहलाता है। मोक्ष मार्ग में सबसे महत्त्वपूर्ण चीज सम्यक चरित्र ही कहा जाता है। सम्यक चरित्र का पालन करने के लिए अनेक आचरण आवश्यक है।

(i) एक व्यक्ति को विभिन्न समिति का पालन करना चाहिए। जैनों में समिति को पाँच प्रकार का माना है,

(a) ईर्या समिति - हिंसा से बचने के लिए निश्चित मार्ग से जाना।

(b) भाषा समिति - नम्र और अच्छी वाणी बोलना।

(c) एषण समिति - उचित भिक्षा लेना।

(d) आदान निक्षेपण समिति - चीजों को उठाने और रखने में सतर्कता।

(e) उत्सर्ग समिति - शून्य स्थानों में मल-मूत्र का विसर्जन करना।

(ii) मन, वचन तथा शारीरिक कर्मों का संयम आवश्यक है, जैन इन्हें 'गुप्ति' कहते हैं। गुप्ति तीन प्रकार का होता है -

(a) काय गुप्ति - शरीर को संयम

(b) वाग गुप्ति - वाणी का नियन्त्रण

(c) मनो गुप्ति - मानसिक संयम।

इसप्रकार गुप्ति का अर्थ है स्वभाविक प्रवृत्तियों पर रोक।

(iii) दस प्रकार के धर्मों का आचरण करना चाहिए। ये धर्म है - सत्य, क्षमा, शौच,

तप, संयम, त्याग, विरक्ति, मार्दव, सरलता और ब्रह्मचर्य।

(iv) जीव और अजीव के स्वरूप पर विचार करना आवश्यक है। चिन्तन के लिए जैनों ने बारह भाव की ओर संकेत किया है जिन्हें 'अनुप्रेक्षा' कहा जाता है।

(v) सर्दी, गर्मी, भूख, प्यास आदि से प्राप्त दुःख के सहन करने की योग्यता आवश्यक है। इस प्रकार के तप को 'परिषह' कहा जाता है।

(vi) पंचमहाव्रत का पालन करना चाहिए। पंचमहाव्रत का पालन बौद्ध धर्म में भी हुआ है। बौद्ध धर्म में इसे पंचशील कहा जाता है। ईसाई धर्म में भी इसका पालन किसी न किसी रूप में हुआ है। पंचमहाव्रत अनेक हैं:—

(i) अहिंसा — अहिंसा का अर्थ है हिंसा का परित्याग करना एवं जीवों के प्रति प्रेमभाव व्यक्त करना। मन, वचन और कर्म तीनों से अहिंसा का पालन होना चाहिए।

(ii) सत्य :— सत्य का अर्थ है असत्य का परित्याग। सत्यव्रत का पालन करने के लिए लोभ, क्रोध, भय तथा परनिन्दा का त्याग आवश्यक है।

(iii) अस्तेय — अस्तेय का अर्थ है चोरी का निषेध। जैनों के अनुसार जीवन का अस्तित्व धन पर निर्भर करता है। धन के बिना मानव अपने जीवन का सुचारुरूप से निर्वाह भी नहीं कर सकता है। किसी व्यक्ति

के धन के अपहरण करने की कामना उसके जीवन के अपहरण तुल्य है। अतः चोरी का निषेध करना अनुशासन कहा गया है।

(iv) ब्रह्मचर्य :- ब्रह्मचर्य का अर्थ है वासनाओं का त्याग। जैन के अनुसार मानसिक अथवा बाह्य लौकिक अथवा पारलौकिक, स्वार्थ अथवा परार्थ सभी कामनाओं का पूर्ण परित्याग ब्रह्मचर्य के लिए नितान्त आवश्यक है।

(v) अपरिग्रह – अपरिग्रह का अर्थ है विषयासक्ति का त्याग। मनुष्य के बन्धन का कारण सांसारिक वस्तुओं से आसक्ति कहा जाता है।

उपरोक्त कर्मों को अपनाकर मानव मोक्षानुभूति के योग्य हो जाता है। कर्मों का आश्रव जीव में बन्द हो जाता है तथा पुराने कर्मों का क्षय हो जाता है इसप्रकार जीव अपने स्वभाविक अवस्था को प्राप्त करती है। यही मोक्ष है। मोक्ष का अर्थ है अनन्त ज्ञान, अनन्त शक्ति, अनन्त दर्शन और अनन्त आनन्द की प्राप्ति।

जिसतरह मेघ और तुषार के हट जाने पर सूर्य समान पृथ्वी को आलोकित कर देता है उसीतरह बाधाओं के हट जाने पर जीव भी अनन्त ज्ञान तथा अन्य अन्तर्निहित गुणों को प्राप्त कर लेता है।